वाल्मीकि रामायण पर आधारित 'श्रीराम–कथा ज्ञान–यज्ञ'

प्रकाशनार्थ

गोरखपुर, 03 सितम्बर। श्री गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं एवं राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत गोरक्षपीठाधीश्वर **महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज**, माननीय मुख्यमंत्री, उ0प्र0 द्वारा द्वय महाराज जी की आदमकद प्रतिमा पर पुष्पांजलि के साथ आज अयोध्याधाम से पधारे अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू रामानन्दाचार्य **स्वामी रामानन्द दास जी महाराज** को वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा'** अमृत वर्षा का शुभारम्भ करते हुये गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त **योगी आदित्यनाथ जी महाराज** ने कहा कि गोरक्षपीठ की परम्परा आदि परम्परा है। इस परम्परा को नया स्वरूप दिया योगिराज बाबा गम्भीरनाथ जी, युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ जी एवं मेरे गुरुदेव महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने। लगभग पॉच हजार वर्षो से भारत में चली आ रही धार्मिक– आध्यात्मिक कथाओं के माध्यम से जगजागरण की विशिष्ट परम्परा की कड़ी में श्रीगोरक्षपीठ युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त श्री दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं अब राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जी की पुण्यतिथि के साप्ताहिक समारोह पर भी यह **श्रीराम कथा** आयोजित है। उन्होंने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम की पावन कथा युगो–युगो से समाज एवं राष्ट्र की समस्त समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करती है। मानव जीवन की सम्पूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक समस्याओं का अचूक रामवाण है **श्रीराम कथा।** श्रीराम का जीवन भारतीय संस्कृति का प्रतिमान है और यही हमारे लिए अनुकरणीय है। आज भारत के सामाजिक–राष्ट्रीय जीवन में जो समस्याऍ मुॅह बाये खड़ी है, हम मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के जीवनादर्शन को स्वीकार कर उनका समाधान कर सकते है। पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्रीराम कथा अमृत वर्षा में सराबोर भक्तगण इस कथा से अपने पारिवारिक–सामाजिक–राष्ट्रीय जीवन का मार्ग प्रशस्त करेंगे तो यह कथा ज्ञान यज्ञ सफल हो जायेगी। उन्होनें कहा कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम एक ऐसे देवत्व स्वरूप महामानव है जिनमें धर्म का साक्षात् स्वरूप प्रतिष्ठित है। श्रीराम धर्म के साक्षात् विग्रह है। पाश्चात्य विद्वानों ने धर्म को संकुचित अर्थ प्रदान किया जबकि हमारी परम्परा में धर्म पूजा–पद्धति अथवा उपासना–पद्धति नही। धर्म एक शास्वत अवधारणा है जो नैतिकता, कर्तव्य परायणता एवं सदाचार की प्रेरणा देता है। धर्म के व्यापक स्वरूप पर ही भारत जैसे राष्ट्र एवं समाज का स्वरूप टिका है। वास्तव श्रीराम कथा राष्ट्र की कथा है। श्रीराम का आदर्श शास्वत है और इसलिए हर भारतीय की आस्था के केन्द्र बिन्दु हैं श्रीराम। माता एवं मातृभूमि के प्रति दायित्वबोध श्रीराम के जीवन का प्रमुख आदर्श है। श्रीराम कथा में ही सामाजिक समरसता का भाव निहित है जहॉ सुग्रीव और सबरी में कोई भेद नहीं। राम की विजय सामाजिक एकता की विजय है, पारिवारिक एकता की विजय है जबकि रावण की पराजय सामाजिक एवं पारिवारिक फुट का परिणाम है। आज हम अपने जिन दो गुरुजनों की पुण्यतिथि पर श्रीराम कथा का आयोजन कर रहे है इसकी प्रासंगिकता यही है कि उन्होंने अपना जीवन राष्ट्र धर्म एवं समाज धर्म को ही समर्पित कर दिया था। सेवा को ही जिन्होंने अपना मिशन बनाया और लोक कल्याण जिनके जीवन का साध्य था।

इस अवसर पर अयोध्याधाम से पधारे जगद्गुरू रामानुजाचार्य **स्वामी श्रीधराचार्य जी महाराज** ने कहा कि श्रीराम कथा भारतीय संस्कृति की प्राण हैं। यह कथा राष्ट्र–धर्म का प्रतिपादन करते हुए जननी और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी महान बताती है। राम का आदर्श यदि सम्पूर्ण धरती पर लागू हो जाय तो यह धरती स्वर्ग बन जायेगी।

दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्याधाम से पधारे महन्त सुरेशदास जी महाराज ने कहा कि श्रीराम ऐसे राजा हुये है जो पहले समाज का कार्य करते थे, फिर परिवार का कार्य करते थे और तब वे अपना कार्य करते थे। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का उत्तर प्रदेश में शासन भी राम के इसी आदर्श पर चल रहा है। सबकुछ करते हुये गोरक्षपीठ की परम्परा की रक्षा और सम्मान को अक्षुण्य रखना उनकी इसी विशेषता का प्रमाण है।

अयोध्याधाम से पधारे अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरू रामानन्दाचार्य **स्वामी रामानन्द दास जी महाराज** को वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा'** के मुखारबिन्दो से दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में श्रीराम कथा की अमृतवर्षा प्रारम्भ हो गई। श्रीराम भारत के पर्याय है। श्रीराम के बिना भारत में भारतवर्ष कहा। भगवान की इस पूरी कथा में कुल पॉच लीलायें – बाललीला, विवाहलीला, वनलीला, रणलीला और राजलीला है। यह कथा वेद भगवान के उपदेश और नारदमुनि द्वारा वाल्मीकि जी को प्रेरित करते के साथ प्रारम्भ होती है। वाल्मीकि

जी ने परमात्मा के 16 गुणों से सम्पन्न अवतार वाले महापुरुष के बारें में श्रीनारद जी से पूछा और नारद जी ने इक्ष्वाकुवंशी श्रीराम के गुणों का वर्णन किया। फिर तमसा नदी के तट पर वाल्मीकि जी ने 24 हजार श्लोकों में श्रीरामायण ग्रन्थ की रचना की। भारतीय संस्कृति के तीन प्राण–ग्रन्थ हैं – श्रीरामायण, श्रीमद्भगवतगीता और श्रीमद्भागवत पुराण। तीनों ग्रन्थों का सार है भगवत्शरणागति।

हरिभजन के साथ कथा श्रीराम के महत्व पर केन्द्रित होती है। कथाव्यास कहते हैं कि श्रीराम का अवतार ही मानवमूल्यों की प्रतिष्ठा के लिये हुआ था। अतः श्रीराम कथा भी मानवमूल्यों की पुर्नस्थापना करती है। कथा हमारे जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है, हमारे जीवन को दिशा देती है, समाज एवं राष्ट्र की एकता और अखण्डता को मजबूत करती है। कथाव्यास के संगीतमय कथा के साथ भक्तों के सुर एवं वाद्ययंत्रों की ताल के साथ भक्तगणों की तालियों की धारा एक साथ मिलकर सभागार को श्रीरामभक्ति की अमृतवर्षा को साक्षात् बना देती है। कथाव्यास ने आज मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम के जीवन आदर्शो पर कथा केन्द्रित करते हुए कहा कि श्रीराम मर्यादा पुरूषोत्तम है। वे करूणा निधान है। वाल्मीकि रामायण की श्रीराम कथा वास्तव में करूणा की कथा है। यह करूणा का ग्रन्थ है। राम का जीवन मानव कल्याण और जगद् कल्याण का आधार है। उन्होंने श्रीराम के साथ–साथ राक्षसी प्रवृत्ति के प्रति रावण एवं उसकी श्रीलंका की अभ्युदय की कथा पर भी प्रकाश डाला।

कथा श्रीराम के जीवन आदर्शो को उद्घाटित करती हुई राम और सीता के वियोग की आध्यात्मिक व्याख्या पर केन्द्रित होती है और कथा में जगद्जननी जानकी का जीवन चरित्र को प्रमुखता के साथ स्थान मिलता है। कथावाचक कहते है करूणानिधान और जगद्जननी मॉ सीता के बीच तीन बार वियोग का संयोग बनता है। तीनों बार मॉ सीता बड़े उद्देश्यों के लिए या यह कहें समाज परिवर्तन का आधार बनती है। तीनों वियोगों में मॉ सीता का जो स्वरूप उभरता है वह भारतीय संस्कृति की उस विशेषता का सूचक है जो दुनिया में कहीं नही दिखता ।

कथावाचक श्रीराम के राजा के स्वरूप की ओर कथा को मोड़ते है और कहते है कि श्रीराम धरती के श्रेष्ठतम शासक हैं। वे राज्य के प्रतीक हैं और इसलिए रामराज्य लोक कल्याणकारी राज्य का पर्याय बना। श्रीराम ने ऐसे राजा का आदर्श प्रस्तुत किया जिसके लिए जनता का हित सर्वोपरि था। तत्पश्चात अपनों का हित था और अपना हित गौड़ था। राजा के रूप में श्रीराम का स्वभाव वज्र से भी कठोर और फूल से भी अधिक कोमल है। कथावाचक कहते है की वाल्मीकि रचित रामायण को स्वंय श्रीराम ने लवकुश के मुख से सुना था। कथा में भगवान के श्रीरामावतार की पृष्ठभूमि तैयार करते हुऐ कथा विश्राम लेती।

पूण्यतिथि समारोह में आज

युगपुरूष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 48वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की तृतीय पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत कल 04 सितम्बर,2017 को प्रातः 10.30 बजे **'भारत की सनातन संस्कृति में राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद''** विषयक संगोष्ठी।

अपराह्न 3.00 बजे से सायं 6.00 बजे तक वाल्मीकि रामायण पर आधारित **'श्रीराम कथा' का आयोजन**

कथा में महन्त राममिलनदास जी महाराज, उड़ीसा से पधारे महन्त शिवनाथ जी, **अयोध्याधाम से पधारे** जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी श्री **श्रीधराचार्य जी महाराज**, श्री बड़ेभक्तमाल अयोध्याधाम से पधारे **श्री अवधेशदास जी महाराज**, दुधेश्वरनाथ महादेव मन्दिर गाजियाबाद से पधारे **महन्त नारायण गिरि जी महाराज**, देवीपाटन शक्तिपीठ, तुलसीपुर से पधारे **योगी मिथिलेशनाथ जी**, कालीबाड़ी के **महन्त रवीन्द्रदास जी**, हनुमान मन्दिर के **महन्त प्रेमदास** जी, चचाईराम मठ के **महन्त पंचानन पुरी**, पूर्व कुलपति **प्रो0 यू0पी0 सिंह आदि उपस्थित थे।**

व्यासपीठ का पूजन अनुष्ठान के यजमानगण सपरिवार सहित श्री ईश्वर मिश्र, श्री सीताराम जायसवाल, श्री जवाहरलाल कसौधन, श्री अवधेश सिंह, श्री पुष्पदन्त जैन, श्री नारायण अजीत सरिया, श्री अशोक जालान, श्री गंगा राय, श्री चन्द्र बंसल, श्री अरूण कुमार अग्रवाल उर्फ लाला बाबू, श्री बृजेश यादव, श्री महेन्द्र पाल सिंह, श्री चन्द्र प्रकाश अग्रवाल, श्री अतुल सर्राफ, श्री विकास जालान, श्री संतोष कुमार अग्रवाल उर्फ शशि जी, श्री विनोद कुमार राना, श्री अभिषेक सिंह, श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री जितेन्द्र बहादुर चन्द, श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह, श्री प्रदीप जोशी, श्री अजय सिंह, श्री संजय कुमार गुप्ता, श्री कृष्ण कुमार गुप्ता, श्री मारकण्डेय यादव, श्रीमती अन्जू चौधरी इत्यादि ने किया।